सत्र 2019–20

Kala Ratna Diploma in Performing Art (K.R.D.P.A.)
Final Year
Private

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory		
	Paper- I	100	33
	Paper-II	100	33
02.	Practical – I Demonstration & Viva	100	33
	II Stage Performance	100	33
	Grand Total	400	132

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष (K.R.D.P.A.)

प्रथम प्रश्न पत्र

समयः 3 घंटे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

इकाई 1

पखावज एवं तबला का इतिहास एवं विकास। पखावज एवं तबला की वादन शैलियों की विशेषताओं का विस्तृत अध्ययन।

इकाई 2

अवनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति के ऐतिहासिक विकासक्रम का गहन अध्ययन। प्राचीन शास्त्रों में वर्णित अवनद्ध वाद्य वादकों के गुण–दोष।

इकाई 3

प्राचीन व मध्ययुगीन ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाद्यों के बोल (पटाक्षर) व उनकी रचनाओं का सामान्य ज्ञान। अवनद्ध वाद्यों की वादन विधि से संबंधित नाट्यशास्त्र में वर्णित पारिभाषिक शब्दों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई 4

मार्गी और देशी ताल पद्वति का विस्तृत अध्ययन। प्राचीन एवं वर्तमान ताल पद्धतियों की समानताएं एवं विभिन्नताएं।

इकाई 5

निम्नलिखित पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों का सचित्र वर्णन तथा इनका भारतीय अवनद्ध वाद्यों से तुलनात्मक अध्ययन– कीटल ड्रम, टेनर ड्रम, स्नेअर ड्रम तथा बास ड्रम।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष (K.R.D.P.A.)
द्वितीय प्रश्न पत्र– संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय : 3 घंटे

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	**33**

इकाई 1

छन्द की परिभाषा। मात्रिक, वार्णिक एवं मुक्त छन्द।
ताल और छन्द का पारस्परिक संबंध। तबले की बंदिशों में छन्दात्मकता।

इकाई 2

स्वतंत्र तबला वादन परम्पराएं एवं सिद्धांत। संगीत संबंधी किसी विषय पर निंबध।

इकाई 3

दिये गये बोलो के आधार पर कायदा, रेला, तिहाई तथा टुकड़ा आदि की रचना कर ताल लिपि में लिखना। किसी ताल में अन्य तालों के ठेके को (सम से सम तक) समायोजित कर लिपिबद्ध करने का अभ्यास।

इकाई 4

मत्त (नौ मात्रा), रूद्र (ग्यारह मात्रा), जयताल (तेरह मात्रा), सवारी (पन्द्रह मात्रा) तथा शिखर ताल (17 मात्रा) में विभिन्न प्रकार की बंदिशों को लिखने का अभ्यास।

इकाई 5

गत एवं परन के विभिन्न प्रकारों का विशिष्ट अध्ययन तथा निर्देशानुसारताललिपि में लिखना। कथक नृत्य की रचनाओं का सामन्य ज्ञान एवं तबला वाद्य पर उनका निकास।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष (K.R.D.P.A.)

क्रियात्मक

वायवा

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

1. त्रिताल, रूपक, झपताल और एकताल में संपूर्ण वादन। (विभिन्न प्रकार के कायदों, रेलों, गतों परनों, टुकड़ों, चक्करदार तथा तिहाईयों सहित)
2. 9 तथा 13 मात्रा के तालों में संपूर्ण स्वतंत्र वादन।
3. ठेकों के माध्यम से लयकारी का प्रदर्शन।
4. बंदिशों का विशलेषणात्मक विवेचन करते हुए घरानेदार बंदिशों को पढ़ने व बजाने का अभ्यास।
5. सुगम संगीत में प्रयुक्त आधुनिक ठेके तथा लग्गियां, लड़ियां व तिहाईयां बजाने का अभ्यास।
6. शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त सभी ठेके संगत की दृष्टि से उपयुक्त लयों में निरन्तर बजाने का अभ्यास।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु

कला रत्न डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट–अंतिम वर्ष (K.R.D.P.A.)

मंच प्रदर्शन

पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33

1. आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष तबला स्वत्रंत वादन का प्रदर्शन :–

   (अ) रूपक, झपताल तथा एकताल में से किसी एक ताल में न्यूनतम मिनिट।
   (परीक्षार्थी की इच्छानुसार)

(ब) 9 तथा 13 मात्रा में से किसी एक ताल में न्यूनतम 10 मिनट।

(परीक्षक की इच्छानुसार)

2 तबला स्वर मे मिलाने का ज्ञान।

3 गायन/वादन/नृत्य के साथ संगति का प्रदर्शन।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास जी
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. ताल वाद्य शास्त्र – डॉ. एम. बी. मराठे
5. भारतीय तालों का शास्त्रोय विवेचन – डॉ. अरूण कुमार सेन
6. ताल वाद्यों की आवश्यकता एवं उपयोगिता– डॉ. चित्रा गुप्ता
7. तबला वादन के घराने एवं परम्पराऍ – डॉ. अबान मिस्त्री
8. भारतीय संगीत वाद्य – डॉ. लालमणि मिश्र
9. ताल परिचय भाग–3 – पं. गिरीषचन्द्र श्रीवास्तव